5 दिसंबर 2023
मूल्य : 5.00 रुपये

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532
मासिक जागरण पत्रिका

श्रीरामजन्मभूमि आंदोलन, हमारी अक्षुण्ण आस्था और सांस्कृतिक धरोहर के प्रति निष्ठा का प्रतीक है। ५०० वर्षों के अनथक और अपराजेय संघर्ष के बाद जन्मभूमि पर श्रीराम लला के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा को देखने का सौभाग्य हमें मिल रहा है। जाग्रत मालवा का यह अंक श्रीरामलला को सादर समर्पित है।

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पम्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

- HIGH PERFORMANCE CHIP
- MULTIPLE PROTECTION
- AUTOMATIC RECOGNITION
- LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL
- PWN CHARGE
- SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

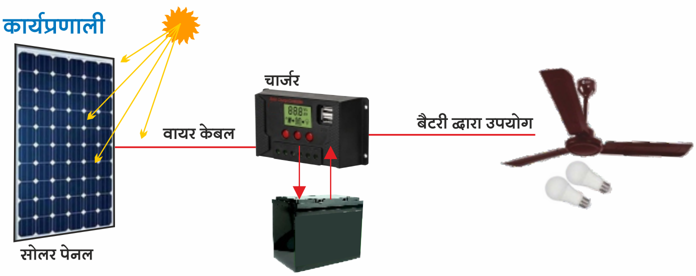

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: 1800 103 5555

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 दिसम्बर 2023 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : 03 अंक : 06
•••
अगहन
युगाब्द ५१२५

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
राकेश दांगी
राजेश सोनी
•••
मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341
•••
Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी - विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरुण सपकाले फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

हम सभी अत्यन्त सौभाग्यशाली हैं। हम सभी ने इस काल में जन्म लिया जिस काल में मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम की जन्मभूमि पर भव्य मन्दिर का निर्माण हो रहा है। हमारे पहले की कई पीढ़ियों ने आततायियों द्वारा अनेक मंदिरों को विध्वंस होते देखा है। सिर्फ मंदिर का निर्माण नहीं हम सब रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के भी साक्षी बनेंगे। जिस जन्म भूमि के लिए सैकड़ों साल तक संघर्ष किया और अनगिनत बलिदान दिये उन हुतात्माओं का स्मरण भी हम भूले नहीं हैं। जब हम प्राण प्रतिष्ठा के बाद रामलला के दर्शन करेंगे तो निश्चित सभी हुतात्मा का भी अवश्य स्मरण करेंगे।

अपने मालवा और निमाड़ क्षेत्र ने भी रामजन्म भूमि संघर्ष में अतुलनीय योगदान दिया है। राम मंदिर निर्माण में भी यथाशक्ति राशि का समर्पण किया है। हम सभी का सपना साकार होने जा रहा है।

वैसे तो अपने भारतवर्ष में अनेक मन्दिर हैं लेकिन अयोध्या में श्रीराम लला का मंदिर हम सबकी श्रद्धा एवं स्वाभिमान का केन्द्र होगा। भव्य मंदिर हम सब के मन में गौरव का भाव जगाकर अपने लाखों वर्ष के इतिहास का साक्षी बनेगा।

अभी तक हमने चारधाम की यात्रा की है अब एक और धाम अयोध्या धाम या **"रामधाम"** की शुभ यात्रा भी करेंगे।

सदियों का संघर्ष और दशकों की प्रतीक्षा के बाद साकार हो रहा है श्री रामजन्मभूमि पर भव्य मन्दिर के निर्माण का सपना

तुषार कोठारी

श्री राम की जन्मस्थली पवित्र अयोध्या पुरी में मुगल अत्याचार के प्रतीक बाबरी ढांचा ढहाए जाने को अब 31 वर्ष गुजर चुके हैं। बाबरी ढांचे के ध्वंस के ठीक 31 वर्ष और 46 दिनों के बाद श्री रामलला अपने भव्य मन्दिर में विराजित होंगे। इस क्षण की कल्पना मात्र से वे हजारों हजार लोग रोमांचित हो उठते हैं, जो 6 दिसम्बर 1992 के दिन अयोध्या में मौजूद थे और बाबरी ढांचे को ढहाने के लिए कारसेवा कर रहे थे।

अयोध्या में उस दिन मौजूद लाखों कारसेवकों और विश्व भर के करोड़ों रामभक्तों का सपना 22 जनवरी को पूरा होने जा रहा है। सदियों के संघर्ष और दशकों की प्रतीक्षा के बाद पूरे हो रहे इस स्वप्न को देखने के समय उस समय की सारी घटनाएं एक के बाद एक स्मृतियों में जीवन्त होने लगती हैं। कारसेवा के लिए देशभर से लाखों की संख्या में अयोध्या पंहुचे रामभक्त कारसेवकों के गगनभेदी जय श्रीराम और मन्दिर यहीं बनाएंगे के नारे। अयोध्या के कारसेवकपुरम में स्व. अशोक जी सिंघल और अन्य वरिष्ठ नेताओं के ओजस्वी उद्गार। अयोध्या की प्रत्येक दीवार पर बाबा सत्यनारायण मौर्य द्वारा बनाए गए राम जन्म भूमि आन्दोलन से सम्बन्धित चित्र। तत्कालीन सरकार और विश्व हिन्दू परिषद के बीच कारसेवा को लेकर चलता संघर्ष।

4 दिसम्बर 1992 को तत्कालीन सरकार ने न्यायालय में बाबरी ढांचे की सुरक्षा के लिए हरफनामा पेश किया था और सरकार और विहिप के बीच हुए वार्ता के बाद बीच का मार्ग यह निकाला गया था कि अयोध्या में मौजूद समस्त कारसेवक पवित्र सरयू नदी की एक-एक मुट्ठी रेत लेकर आएंगे और जन्म भूमि स्थल पर सरयू की रेत डालकर प्रतीकात्मक कारसेवा करेंगे। लेकिन इस निर्णय से कोई भी संतुष्ट और सहमत नहीं था। ना तो कारसेवक और ना ही विहिप के नेता। एक मुट्ठी सरयू की रेती डालने की बात सुनकर कारसेवकों का आक्रोश चरम पर जा पहुंचा था।

6 दिसम्बर का दिन भी आ गया। गुस्से में भरे कारसेवकों के जत्थे जन्मभूमि स्थल की तरफ बढ़ने लगे। हनुमान गढ़ी से लेकर जन्मभूमि स्थल तक पांव धरने की जगह नहीं थी। कारसेवकों के जत्थे पर जत्थे आते जा रहे थे और प्रत्येक कारसेवक जन्मभूमि परिसर के पास पहुंचना चाहता था। जन्मभूमि परिसर के चारों ओर लोहे के मजबूत पाइप्स और एंगलों से जन्मभूमि परिसर को किले में परिवर्तित कर दिया गया था। लोहे के इस किले के चप्पे-चप्पे पर सुरक्षाकर्मी तैनात किए गए थे। जन्मभूमि परिसर के चारों ओर आठ से बारह फीट ऊंची मजबूत लोहे की बैरिकेटिंग की गई थी। पुलिस और प्रशासन को उम्मीद थी कि कारसेवक प्रतीकात्मक कारसेवा करके लौट जाएंगे।

सुबह सात बजे से कारसेवकों के जत्थों के पहुंचने का क्रम शुरु हुआ। सुबह के साढ़े दस बजते-बजते जन्मभूमि परिसर कारसेवकों से खचाखच भर चुका था। परिसर की बैरिकेंटिंग के चारों ओर कारसेवकों की भारी भीड़ जमा हो चुकी थी। पूर्व उप प्रधानमंत्री और तत्कालीन वरिष्ठ भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी और विहिप के अशोक जी सिंघल करीब पौने ग्यारह बजे जन्मभूमि परिसर पहुंचे और वहां का अवलोकन करके लौट गए।

उनके जाते ही सीता रसोई की तरफ मौजूद कारसेवकों के जत्थों ने लोहे की बैरिकेटिंग को उखाड़ने के लिए धक्के देना शुरु किए। कुछ कारसेवक बैरिकेटिंग पर चढ़ गए और देखते ही देखते बैरिकेटिंग उखाड़ दी गई। बैरिकेटिंग के उखड़ते ही हजारों कारसेवक बाबरी ढांचे की ओर दौड़ पड़े। ढांचे की सुरक्षा के लिए तैनात तमाम सुरक्षाकर्मी कारसेवकों का आक्रोश देख कर उन्हें रोकने की बजाय स्वयं वहां से हट गए। देखते ही देखते **एक धक्का और दो, बाबरी ढांचा तोड़ दो** के नारों के बीच ढांचे को ढहाने के प्रयास शुरु हो गए। जिसके हाथ में जो आया, वह उसी से ढांचे को ढहाने की कोशिश करने लगा। बेरिकेंटिंग के लिए लगाए गए पाइप भी ढांचे को ढहाने के काम में आए।

वर्तमान में उज्जैन में भाजपा के नेता पूर्व पार्षद शिवेन्द्र तिवारी के हाथों में भी पाइप आ गया, जिसकी मदद से वे ढांचे की बाहरी दीवार ढहाने की कोशिश कर रहे थे। इन पंक्तियों के लेखक ने अपने कैमरे से उसी समय उनका फोटो भी लिया था। मन्दसौर में दैनिक गुरु एक्सप्रेस के संपादक आशुतोष नवाल भी अपने साथियों

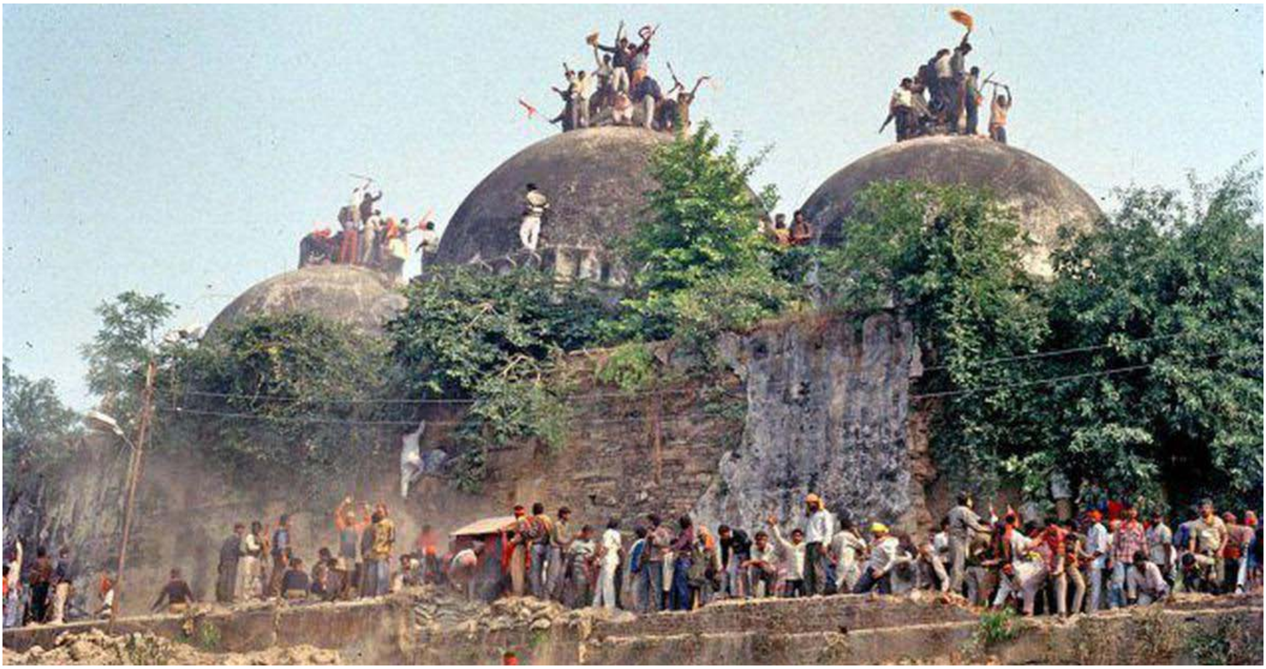

के साथ ढांचे के भीतर मौजूद थे। रतलाम के तेजसिंह हाड़ा,अनिल मेहता, संजय पंवार आदि ढांचे के गुंबद पर चढ़कर उसे गिराने की कोशिशों में लगे थे। रतलाम के तत्कालीन बजरंग दल संयोजक निर्मल कटारिया, अशोक ललवानी, कमलेश पाण्डेय आदि भी ढांचे के भीतर मौजूद थे। कारसेवा का यह क्रम शाम तक चलता रहा।

ढांचे का पहला गुंबद दोपहर करीब साढ़े बारह बजे ढहा दिया गया। इन पंक्तियों के लेखक के हाथों में उस वक्त कैमरा मौजूद था और यह संभवतः विश्व का अकेला कैमरा था, जो कारसेवा के दौरान ढांचे के भीतर मौजूद था। क्योंकि वैसे तो उस समय अयोध्या में दुनियाभर के पत्रकार मौजूद थे, लेकिन कारसेवा के समय उन्हें जन्मभूमि स्थल से करीब एक किमी दूर रखा गया था। और कारसेवा शुरु होने के बाद कारसेवकों ने किसी भी पत्रकार को वहां पहुंचने नहीं दिया। कारसेवा के यह फोटो इन पंक्तियों के लेखक ने कारसेवा के 25 वर्ष पूर्ण होने पर अपनी पुस्तक में प्रकाशित भी किए है। कारसेवा के इन चित्रों में कारसेवकों का जूनून स्पष्ट देखा जा सकता है।

अयोध्या के आन्दोलन में मालवांचल के हजारों रामभक्तों का योगदान रहा है। अयोध्या में हुई अंतिम कारसेवा से पहले की दो कारसेवाओं में भी रतलाम, मन्दसौर, उज्जैन इत्यादि जिलों से हजारों कारसेवक अयोध्या पहुंचे थे। आखरी कारसेवा जिसमें ढांचे को ढहा दिया गया, उस कारसेवा में भी इन क्षेत्रों से हजारों कारसेवक अयोध्या पंहुचे थे। रतलाम से इस कारसेवा में विहिप के तत्कालीन संगठन मंत्री दर्शन शर्मा, बजरंग दल संयोजक निर्मल कटारिया, विनय कोटिया, कमलेश पाण्डेय, अनिल व्यास, ग्रामीण क्षेत्रों से स्व. जगदीश पाटीदार, दशरथ पाटीदार समेत करीब ग्यारह सौ कारसेवक अयोध्या पहुंचे थे।

उधर मन्दसौर से भी लगभग एक हजार कारसेवक अयोध्या पहुंचे थे। इनमें स्व.ओमप्रकाश पुरोहित, गोपालकृष्ण पाटिल, वर्तमान में दैनिक गुरु एक्सप्रेस के संपादक आशुतोष नवाल, नीमच विधायक दिलीप सिंह परिहार, केबिनेट मंत्री जगदीश देवड़ा, भाजपा नेता स्व.प्रहलाद बंदवार, राधेश्याम पाटीदार, सुनील जैन महाबली, नितिन शिन्दे, भरत शिन्दे, सुनील जैन महाबली इत्यादि लोग प्रमुख रुप से शामिल थे।

उज्जैन से भी हजारों कारसेवक पहुंचे थे। विशेष रुप से भाजपा नेता शिवेन्द्र तिवारी, सांसद अनिल फिरोजिया, पूर्व विधायक शिवा कोटवानी, पूर्व विधायक स्व.उदयसिंह पाण्डया, महामण्डलेश्वर स्वामी शांतिस्वरुपानन्द जी इत्यादि विशेष रुप से पहुंचे थे। अन्तर्राष्ट्रिय ख्याति प्राप्त कलाकार बाबा सत्यनारायण मौर्य ने पूरी अयोध्या को अपने चित्रों से रंग दिया था। कारसेवकपुरम में बनाए गए मंच के संचालन की जिम्मेदारी भी बाबा मौर्य ने ही संभाली थी। इतना ही नहीं ढांचे के ध्वंस के बाद बनाए गए अस्थाई मन्दिर को ढंकने के लिए जिस केसरिया कपड़े का उपयोग किया गया था, वह भी बाबा मौर्य ने उपलब्ध कराया था।

राम मंदिर संघर्षयात्रा

अनव रघुवंशी

संपूर्ण लोको में सुंदर तथा रणक्रीड़ा में धीर कमलनयन, रघुवंश नायक, करूणा की मूर्ति, आहतों की एकमात्र आशा, सर्वेश्वर सर्वांतर्यामी, सच्चिदानंद, मर्यादा पुरूषोत्तम सीतापति, दशरथ पुत्र, जिनका नाम सुनते ही और लेते ही मन आनंदित, शांत और सौम्य हो जाता है, आत्मा प्रफुल्लित और निश्चिंत हो जाती है। ऐसे करोड़ों हिंदुओं की आस्था के मुख्य स्तंभ अयोध्या के लल्ला, ओरछा के राजा भगवान श्रीराम का जन्म अयोध्या में हुआ था। वैज्ञानिक, धार्मिकगुरू, वेदों और दार्शनिकों के अनुसार तारीख तनिक अस्पष्ट है पर समय, स्थान प्रमाणित हैं।

ऐसे हिंदुओं के इष्ट को मनोवांछित स्थान काफी जद्दोजहद, लड़ाई, दंगों और वर्षों टेंट में गुजारने के बाद 24 जनवरी 2024 को मिलने जा रहा है। जिसके पीछे का इतिहास बहुत संघर्षमय, कठिन और 550 वर्ष पुराना है। राम जन्मभूमि भारत में वैमनस्य स्थिति में था और यही मुद्दा न्यायालय का सबसे लंबा चलने वाला केस बना। इसकी शुरूआत का श्रेय भारत में लगातार गैर हिंदूवादियों के द्वारा हुए अत्याचारों को दिया जाता तो कोई अतिश्योक्ति नही होगी। कहते हैं 1528 में बाबर ने अपने सेनापति मीरबाकी को अयोध्या के भव्य राम मंदिर को तोड़ने का आदेश दिया। 1,75,000 हिंदू वीरों के बलिदान के बाद ही मुगल मंदिर को हानि पहुंचा सके। विवादित जगह पर एक बाबरी नामक मस्जिद का निर्माण कराया, जिसमें तीन गुंबदें थी। 1853 में हिंदुओं ने दावा किया कि मुख्य गुंबद के नीचे भगवान राम का जन्मस्थान है और तभी हिंदुओं और मुसलमानों के बीच पहली हिंसा हुई। 1859 में ब्रिटिश सरकार ने तारों से विवादित जगहों में बंटवारा किया, मुसलमानों और हिंदुओं की प्रार्थनाओं की इजाजत दी। 1885 में ये मामला पहली बार अदालत में पहुंचा और इस मामले ने पूरे 135 सालों की कानूनी लड़ाई लड़ी। साल 1949 में भगवान राम की मूर्तियां मस्जिद में पाई गईं, मुस्लिम समुदाय के अनुसार रात में चुपचाप ये मूर्तियां वहाँ किसी ने रखवा दी थीं। 1950 में फैजाबाद सिविल कोर्ट में दो अर्जी दाखिल की गई इसमें एक में रामलला की पूजन की इजाजत को लेकर और दूसरी विवादित ढांचे पर राम की मूर्तियां रखने की इजाजत मांगी गई। दोनों समुदायों ने अपनी-अपनी याचिका दायर की। 1959 में निर्मोही अखाड़ा ने विवादित स्थल हस्तांतरित करने के लिये मुकदमा दायर किया उसी के दो वर्ष बाद उत्तर प्रदेश सुन्नी वक्फ बोर्ड ने बाबरी मस्जिद के मालिकाना हक के लिए मुकदमा दायर किया। 1984 में विश्व हिंदू परिषद ने विवादित ढांचे की जगह मंदिर बनाने के लिए

कमिटी गठित की। 6 दिसंबर 1992 को देशभर में सांप्रदायिक दंगे भड़के जिनमें 2000 से ज्यादा लोग मारे गए। कारण यह था कि विश्व हिंदू परिषद और शिवसेना समेत दूसरे हिंदू संगठनों के लाखों कार्यकर्ताओं ने विवादित ढांचे को गिरा दिया और यह केवल पहली हिंसा नहीं थी इसके पहले भी कई हिंसाएं हो चुकी थीं। आपको बता दें श्रीराम मंदिर जन्मभूमि के लिए हिंदू समाज ने 78 धर्मयुद्ध लड़े जिनमें 3,50,000 से ज्यादा हिंदू वीरों ने अपनी प्राणों की आहुति दी। बाबर के काल में पांच धर्मयुद्ध, हुमायूँ काल में 10, अकबर काल में 20, औरंगजेब काल में 30, नवाब सादत अली के काल में 5, हैदर के समय 3, वाजिद अली के समय 2, अंग्रेजों के समय 2, पूर्व प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के कार्यकाल में एक धर्मयुद्ध लड़ा गया।

2010 में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने विवादित स्थान को तीन बराबर हिस्सों में बांटने का आदेश दिया जिस पर 2011 में सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी। साल दर साल 2016,17,18 में लगातार इस मुद्दों पर बात चली, 2019 में सुप्रीम कोर्ट ने चीफ जस्टिस रंजन गोगाई की अध्यक्षता में पांच सदस्यीय संविधान पीठ का गठन किया। 9 नबंबर को सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में कहा - विवादित भूमि पर बनेगा मंदिर, मुस्लिम पक्ष को कहीं और मिलेगी जमीन, उस दिन उन लाखों लोगों और करोड़ों हिंदुओं की आस्था की जीत हुई। उन्हें उनका मुकद्दस, परम पूज्य और पवित्र स्थान वापस मिला। 25 मार्च 2020 तकरीबन 28 साल बाद रामलला टेंट से निकलकर तत्कालीन मंदिर में शिफ्ट हुए। 5 अगस्त 2020 में प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा राम मंदिर का भूमि पूजन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ और अब बहुत ही जल्द, राम जन्मभूमि पर दिव्य और अलौलिक राम मंदिर तैयार हो जाएगा। जिसकी ऊँचाई 161 फीट रहेगी, इनकी ईंटों में श्रीराम लिखा रहेगा। मंदिर में 5 गुंबद होगी पूरा मंदिर 360 पिलर पर टिका हुआ होगा। इसमें गर्भगृह, कुंडू मंडप, नृत्य मंडप और रंगमंडप भी होगा। जो भारत के राममय हिंदुओं की आस्था, शक्ति, भक्ति का मुख्य केन्द्र बनेगा।

कालजयी स्वराज की शपथ

सचिन बघेल

तुम्हारे राजे शिवाजी कहां हैं? सुना है भेड़िए की पूँछ दिखाने पर इनाम मिलता है। इसीलिए आया हूं आपके दरबार में। भेड़िए से लड़ते हुए कपड़े पूरे फट चुके थे, कहीं-कहीं भिड़ंत के घाव भी शरीर पर देखे जा सकते थे। इस चिल्ला-पुकार को सुनकर 13 वर्ष के शिवाजी राजे अपने महल से बाहर आते हैं और भारी-भरकम आवाज वाले उस व्यक्ति से उसका नाम पूछते हैं। जवाब आता है **भीमा। क्या करते हो? राजे ने पूछा।** भीमा ने कहा दूर देश से आया हूं। लोहार हूं। उधर सूखा पड़ गया था, पेट पल सके इसलिए इस ओर आ गया था। जंगल में घूमते वक्त मेरा सामना तीन भेड़ियों से हो गया। मेरे पास आपकी तरह अच्छी तलवार तो नहीं थी लेकिन इस लट्ठ से उनमें से एक भेड़िये को समाप्त कर दिया। राजे ने कहा किसी वैद्य को बुलाओ, भीमा का इलाज कराओ और इसे इनाम भी दो। आगे राजे ने कहा हमारे लिए हथियार बनाओगे? तुरंत भीमा ने राजे के पैर पकड़ लिए। आगे राजे ने आदेश देते हुआ कहा भीमा को लोहारखाने में ले जाया जाए और उसकी काम की जरूरतों को पूरा किया जाए। इस प्रकार दादा जी कोंडदेव जो कि राजे के पिताजी शाहजी राजे भोंसले के कहने पर छः वर्षीय शिवाजी को जब पुणे सहित पांच गांवों की जागीरी दी गई थी, तब उनके साथ उनकी देखरेख करने के लिए पहुंचाया गया था। पुणे उस समय आज की तरह इतना बड़ा शहर नही था, सह्याद्रि के घने जंगलों के बीच खंडहर पड़ा एक वीरान गांव था। दादा कोंडदेव उस समय सिर्फ उनके संरक्षक ही नहीं थे वे उनके मार्गदर्शक गुरू जैसे भी थे। उन्होंने भीमा के लिए दी गई आज्ञा का पालन करवाया। उस रात्रि में छत्रपति शिवाजी महाराज की मां जीजाबाई और दादाजी कोंडदेव के बीच चर्चा हुई कि शिवाजी की इस 13 वर्ष की आयु में व्यक्ति की परख कितनी हो गई है। मात्र व्यक्ति परख ही नहीं स्वराज का उद्घोष भी अपनी राजमुद्रा अष्टकोणीय आकृति में बनाकर किया, जिस पर लिखा था -

प्रतिपच्चंद्रलेखेव वर्धिष्णुर्विश्ववन्दिता।
शाहसूनोः शिवस्यैषा मुद्रा भद्राय राजते।।

प्रतिपदा के चंद्रमा की तरह बढ़ने वाली और पूरे विश्व में वंदनीय, शाहजी के पुत्र शिवाजी की, यह मुद्रा लोक-कल्याण के लिए ही विराजमान है। कम ही लोग जानते हैं कि भगवान विष्णु का ही एक नाम है- वर्धिष्णु। यह नाम गरुड़ पुराण के विष्णु सहस्त्रनाम में मिलता है। उस मुगलशाही युग में जब फारसी में मुद्राएं चलती थीं। ऐसे समय स्वराज का स्वप्न देखा गया। जिसमें त्रुटिशून्य उनका व्यक्तित्व जीवनपर्यंत रहा। इसी का परिणाम था कि उन्होंने रोहितेश्वर में अपने साथी तानाजी मालसुरे, बाजी पासलकर, बाजीप्रभु देशपांडे, येसाजी कंक, बाजी जेधे, चिमनाजी बालाजी, बहीरजी नाईक के साथ अपनी तर्जनी के रक्त से शिव का रक्ताभिषेक कर स्वराज की प्रतिज्ञा की। यह वह स्वराज था जो किसी व्यक्ति की महत्वाकांक्षा के लिए सत्ताप्राप्ति नहीं थी, यह श्री के राज्य यानी ईश्वर के राज्य की स्थापना की शपथ थी। जिसमें नारी के सम्मान की, इस देवभूमि के अपमान की, गौ-ब्राह्मण और अपने स्वजनों के रक्त से स्नान करती भारत भूमि के पराभव से मुक्ति की शपथ थी। **हे शम्भो, हर हर महादेव !** आज तुझसे प्रेरणा लेकर हिंदवी स्वराज की शपथ ले रहे हैं। हमारे संकल्प को लक्ष्य तक पहुंचाने में तू समर्थ है। जब तक स्वराज्य की स्थापना नहीं होती, तब तक मित्रता के लिए पकड़ा हुआ एक-दूसरे का हाथ हम कभी नहीं छोड़ेंगे। जो वचन दिया है उसे कभी नहीं तोड़ेंगे। अब प्रश्न यह उठता है कि स्वराज का श्रीगणेश कहां से किया जाए - तानाजी ने कहा तोरणा की पहाड़ी पर बने दुर्ग से जिसे तोरणदुर्ग कहा जाता है। रात के अंधेरे में तोरणदुर्ग के चारों ओर झाड़ियों, पेड़ों आदि के नीचे मतवाले सैनिक छिपकर बैठ गए। सूर्य की पहली किरण फूटने के पूर्व ही **हर हर महादेव** की ध्वनि सुनाई दी। आदिलशाही सैनिक समझ भी नही पाए कि क्या हुआ है। राजे के मावल सैनिकों ने धावा बोल दिया और दुर्ग पर अधिकार कर लिया। इस पहली मुहिम में राजे के साथ एक हजार पचास सैनिक थे। जिसके लिए भीमा ने अपने चार अन्य साथियों के साथ इससे कहीं अधिक हथियार बनाए थे। भीमा को इस बात का मलाल था कि वह बछिया नहीं बना पाया। इस मुहिम में उसने स्वयं ने भाग लेकर कई दुश्मन सैनिकों के सर धड़ से अलग किए थे।

दुर्ग से आदिलशाही ध्वज उतारा गया और तोरणा दुर्ग पर भगवाध्वज फहराने लगा। इसके ठीक सामने की पहाड़ी पर स्थित दुर्ग को शिवाजी महाराज ने अपनी राजधानी बनाया जिसका नाम राजगढ़ रखा गया। चौतरफा भारतभूमि पर मुस्लिम आक्रांताओं के शासन के बीच समाज गुलामी को ही अपनी नियती समझने लगा था, दिल्ली के तख्त पर बैठे बादशाह को अजेय भगवान समझने के लिए विवश हो चुका था। ऐसे 320 वर्षो के दुर्दांत समय, जब सोमनाथ, अयोध्या, मथुरा, काशी के मंदिर ध्वस्त हो चुके थे। ऐसे समय सूर्य के तेज से उदित हुआ छत्रपति शिवाजी महाराज के रूप में स्वराज का श्रीगणेश। छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के जब 350 वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं, तब हमें यह जानना आवश्यक हो जाता है कि स्वराज का मूल्य क्या होता है। यह कब स्थापित होता है और इसे बनाए रखने के लिए कैसे बलिदान की आवश्यकता होती है। यह कालजयी कैसे बना रह सकता है। जय भवानी, जय शिवाजी।

अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द

डॉ. सुब्रतो गुहा

पुण्यभूमि भारत में अनेक पुण्यात्माओं ने प्रत्येक शताब्दी में जन्म लिया जिससे भारत भूमि महानतम धार्मिक भूमि बनी। ऐसे ही एक कालजयी राष्ट्र ऋषि का जन्म 22 फरवरी 1856 को पंजाब प्रान्त के जालन्धर शहर के तहलवान गाँव में हुआ। बाल्यकाल का नाम था मुंशीराम विज। पिता नानकराम विज पुलिस सेवा में थे तथा उनका विभिन्न स्थानों में स्थानन्तरण होने के कारण बालक मुंशीराम की प्रारंभिक पढ़ाई अलग-अलग शहरों में संपन्न हुई। मुंशीराम के जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया, जब बरेली में आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती की एक सभा में मुंशीराम को उनके पिता ले गए। स्वामी दयानन्द के ओजस्वी प्रवचन के प्रभाव से बालक मुंशीराम वैदिक धर्म के निष्ठावान अनुयायी बन गए।

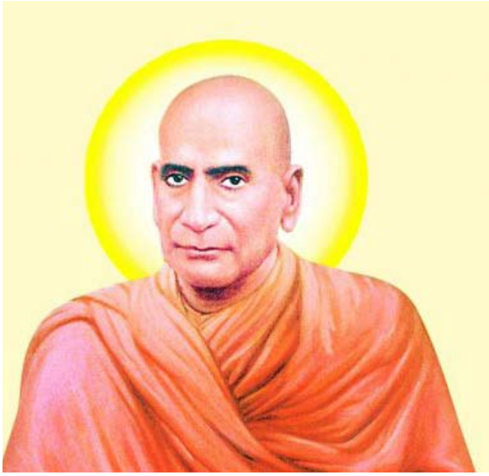

पढ़ाई पूर्ण कर वे एक सफल और प्रतिष्ठित वकील बने तथा जालन्धर आर्य समाज अध्यक्ष भी बन गए। सन 1883 में स्वामी दयानन्द के निर्वाण के बाद उन्होंने आर्य समाज की गतिविधियों में अनेक महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन किया। अपनी आत्मकथा **कल्याणमार्ग का पथिक** में उन्होंने लिखा है कि 4 अक्टूबर 1888 को जब वे न्यायालय से घर लौटे, तब उनकी छोटी पुत्री दिया कुमारी उस दिन अपने ईसाई विद्यालय में जो पाठ पढ़ाया गया था, वह अपने पिता को गाकर सुनाने लगी - **एक बार ईसा-ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल, ईसा मेरा राम रमैया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया।** इस पर मुंशीराम समझ गए कि ईसाई विद्यालयों में हिन्दू बालिकाओं का मत परिवर्तन कर भविष्य में धर्मान्तरण का खेल खेला जा रहा है। तब मुंशीराम ने निश्चय किया कि हिन्दू बालिकाओं के लिए अलग विद्यालय एवं महाविद्यालय खोलने की आवश्यकता है - जिससे उन्हें अपने मूल धर्म-संस्कृति का ज्ञान हो सके। आगे चलकर भारत के विभिन्न शहरों में उन्होंने अनेक कन्या विद्यालय प्रारंभ करने के साथ ही कांगड़ा में गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय भी स्थापित किया। सामाजिक क्षेत्र में सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन अछूतों द्वारा, समरसतापूर्ण समाज निर्माण की दिशा में भी उन्होंने अविस्मणीय योगदान दिया।

सन 1917 में सन्यास लेने के उपरान्त मुंशीराम को नया नाम मिला - स्वामी श्रद्धानन्द। अपनी पत्रिकाओं तेज अर्जुन तथा सद्धर्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ में जनजागरण किया। बलपूर्वक या प्रलोभन द्वारा मुस्लिम एवं ईसाई धर्म में धर्मान्तरित हजारों नर-नारियों को उन्होंने शुद्धि आन्दोलन के माध्यम से अपने मूल धर्म में लौटाया और इसे घर-वापसी का नाम दिया गया। इसमें कराची की एक मुस्लिम महिला असगरी बेगम भी शामिल थी, जो स्वामी श्रद्धानन्द से प्रभावित होकर दिल्ली आई और अपने बच्चों के साथ हिन्दू धर्म अपना लिया। वैदिक रीति से असगरी बेगम का शुद्धिकरण, संस्कार कर उन्हें नया हिन्दू नाम शांतिदेवी दिया गया।

स्वामी श्रद्धानन्द के कार्यों से कट्टरपंथी मुस्लिम आक्रोशित हो गए। ऐसे ही एक कट्टरपंथी जिहादी मुस्लिम अब्दुल रशीद ने 23 दिसम्बर 1926 को दिल्ली के नया बाजार क्षेत्र में स्वामी श्रद्धानन्द के निवास पर पहुँचकर गोलियों से स्वामीजी का शरीर छलनी कर दिया। स्वामीजी के हत्यारे अब्दुल रशीद को वहीं पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया गया और मुकदमा चलने के बाद 22 नबंबर 1927 को दिल्ली की सेन्ट्रल जेल में फाँसी दे दी गई।

दिल्ली में 25 दिसम्बर 1926 को जब स्वामीजी की अंतिम यात्रा निकली, तो लगभग पाँच लाख नर-नारियों की अपार संख्या स्वामीजी को श्रद्धा निवेदन हेतु उपस्थित हुई। इस वर्ष 23 दिसम्बर को भी हम सब निष्ठावान हिन्दू समाजजन नम आँखों के साथ कालजयी युगपुरूष स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धा सुमन अर्पित करेंगे।

आप तो चले गए हैं लेकिन,
स्मृति शेष हृदय आंगन में।
तुलसी क्यारे दीप जलाते,
अंकित सूरत भोली आँखन में।।

मुगलों के काल लाचित बोड़फुकन का जन्मदिवस

मुगलों के काल लाचित बोड़फुकन का जन्म 24 नवंबर, 1622 को हुआ था। लाचित बोड़फुकन की वीरता के कारण मुगल नहीं कर पाए थे पूर्वोत्तर भारत पर कब्जा।

असम के लोग तीन महान व्यक्तियों का बहुत सम्मान करते हैं, प्रथम **श्रीमंत शंकर देव,** जो पंद्रहवीं शताब्दी में वैष्णव धर्म के महान प्रवर्त्तक थे; दूसरे **लाचित बरफुकन** जो असम के सबसे वीर सैनिक माने जाते हैं और तीसरे **लोकप्रिय गोपीनाथ बारदोलोई,** जो स्वतन्त्रता संघर्ष के अग्रणी नेता थे।

लाचित बोड़फुकन 'अहोम साम्राज्य' के एक सेनापति थे, उनको 1671 में हुई सराईघाट की लड़ाई में उनकी नेतृत्व-क्षमता के लिए जाना जाता है। इस लड़ाई में उन्होंने रामसिंह प्रथम के नेतृत्व वाली मुग़ल सेनाओं के कामरूप पर अधिकार करने के प्रयास को विफल कर दिया गया था।

औरंगज़ेब का पूरे भारत पर राज करने का सपना अधूरा था।

औरंगज़ेब चाहता था कि उसका साम्राज्य पूरे भारत के ऊपर हो, लेकिन भारत के उत्तर पूर्वी हिस्से तक वह नहीं पहुँच पा रहा था। औरंगज़ेब के अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए विशाल सेना असम पर आक्रमण करने के लिए भेजी थी। औरंगजेब ने इस हमले के लिए एक राजपूत राजा को भेजा था। उस समय असम का नाम अहोम था। राजा रामसिंह अहोम को जीतने के लिए विशाल सेना लेकर निकल चुका था। अहोम राज के सेनापति का नाम था लचित बोरफूकन था। इस नाम से उस समय लगभग सभी लोग परिचित थे। पहले भी कई बार लोगों ने अहोम पर हमले किये थे जिसे इसी सेनापति ने नाकाम कर दिए थे। जब लाचित को मुगल सेना आने की खबर हुई तो उसने अपनी पूरी सेना को ब्रह्मपुत्र नदी के पास खड़ा कर दिया था।

लाचित बडफूकन की यह होती थी योजना

कुछ इतिहासकार अपनी पुस्तकों में लिखते हैं कि लाचित बजफूकन (बरफुकन-बोरपूकन, नाम को लेकर आज भी थोड़ा रहस्य है) अपने इलाके को अच्छी तरह से जानता था। वह ब्रह्मपुत्र नदी को अपनी माँ मानता था। असल में अहोम पर हमला करने के लिए सभी को इस नदी से होकर आना पड़ता था और एक तरफ (जिस तरफ लाचित सेना होती थी) का भाग ऊंचाई पर था और जब तक दुश्मन की सेना नदी पार करती थी, तब तक उसके आधे सैनिक मारे जा चुके होते थे। यही कारण था कि कोई भी अहोम पर कब्जा नहीं कर पा रहा था।

सराईघाट का भीषण युद्ध

यह युद्ध सराईघाट के नाम से जाना जाता है। लाचित बोरफूकन की सेना के पास बहुत ही कम और सीमित संसाधन थे। सामने से लाखों लोगों की सेना आ रही थी, किन्तु लाचित बडफूकन की सेना का मनोबल सातवें आसमान पर था। जैसे ही सेना आयी

तो कहा जाता है कि लाचित के एक सैनिक ने कई सौ औरंगजेब के सैनिकों को मारा था। जब सामने वालों ने लचित बडफूकन के सैनिकों का मनोबल देखा, तो सभी में भगदड़ मच गयी थी।

इस युद्ध के बाद फिर कभी उत्तर-पूर्वी भारत पर किसी ने हमला करने का सपने में भी नहीं सोचा। खासकर औरंगजेब को लाचित बडफूकन की ताकत का अंदाजा हो गया था। मुगल सेना की भारी पराजय हुई। फिर भी वहाँ से लौटते हुए रामसिंह ने लाचित बरफुकन की भूरि-भूरि प्रशंसा की। लाचित ने युद्ध तो जीत लिया, परन्तु अपनी बीमारी को मात नहीं दे सके। आखिर सन् 1672 में उनका देहांत हो गया। भारतीय इतिहास लिखने वालों ने इस वीर की भले ही उपेक्षा की हो, पर असम के इतिहास और लोकगीतों में यह चरित्र मराठा वीर शिवाजी की तरह अमर है।

अटल बिहारी वाजपेई और साहित्य!

प्रशंसा तिवारी

सत्ता का खेल तो चलेगा,
सरकारें आएंगी-जाएंगी,
पार्टियां बनेंगी- बिगड़ेंगी,
मगर ये देश रहना चाहिए,
इस देश का लोकतंत्र अमर रहना चाहिए!

भारतीय राजनीति में एक प्रमुख चेहरा होने के साथ साथ

एक उत्कृष्ट कवि, अटल बिहारी वाजपेई! 25 दिसंबर, 1924 को ग्वालियर में जन्मे, अटल जी को बालपन से ही कविताओं और राजनीति में रुचि थी, जिसकी प्रेरणा उन्हें उनके पिताजी से मिली जो स्वतंत्रता सेनानी थे।

उनका हिंदी साहित्य में योगदान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है और उनकी कविताएं भाषा, समाज और राजनीति के माध्यम से अद्वितीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। उनकी कविताएं उस समय के सामाजिक और राजनीतिक विवादो को छूने वाली थी, और इसी के कारण वे एक प्रतिष्ठानक लेखक बन गए।

अपनी कविताओं में वाजपेई जी ने विभिन्न विषयों पर अपने विचारों को सुंदरता से व्यक्त किया। उनकी कविताएँ आम जनता के दिलों तक पहुंचने में सफल रही हैं क्योंकि वे साधारिता के साथ भरी होती हैं और समस्त समृद्धि और दुःख के संवेदनशीलता के साथ समर्पित हैं।

अटल जी की कविताओं में वे भावनाएं हैं जो आम जनता के दिलों में समाहित होती हैं। उनकी कविताएँ साहित्य के माध्यम से समाज में जागरूकता बढ़ाती हैं और एक सकारात्मक सोच को प्रोत्साहित करती हैं।

उनकी प्रमुख कविताएं राष्ट्रीय एकता, सामाजिक न्याय, और समाज में सुधार के सिद्धांतों पर आधारित हैं। **कैदी का वृत्तांत** जैसी कविताएं उनके दृढ़ स्वाभाविक और देशप्रेमी दृष्टिकोण को प्रतिष्ठित करती हैं। उनकी कविताओं में साहित्यिक रूप से रिच भाषा का उपयोग, और समस्त भारतीय समाज के प्रति उनकी संबंधपूर्णता का परिचायक है।

मेरे सपनों का भारत, जो उनकी एक प्रमुख कविता है, में वे एक सामरिक और सांस्कृतिक सुधार का सपना देखते हैं, जो एक समृद्ध और एकत्रित राष्ट्र की ऊँचाइयों को सूचित करता है। **आओ फिर से दिया जलाएं%** और **हौसला बुलंद** आदि कविताएं भी राष्ट्रभक्ति और समर्पण का भाव प्रस्तुत करती है।

वाजपेयी का साहित्यिक योगदान हिंदी के माध्यम से एक सशक्त, समृद्ध, और सामरिक रूप से समृद्ध भारत की दिशा में रहा है। ये कविताएँ अद्वितीय हैं क्योंकि वे व्यक्ति को उद्दीपन और संवेदनशीलता की दिशा में मोड़ती है।

वाजपेयी की कविताएँ भारतीय साहित्य के इतिहास में एक विशेष स्थान रखती हैं। उनका योगदान हिंदी साहित्य को नई ऊँचाइयों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण रहा है।

अटल बिहारी वाजपेयी की विचारशीलता और उनकी कविताएँ उन्हें व्यक्तिगत और सामाजिक संबंधों के क्षेत्र में एक अद्वितीय स्थान पर ला रही हैं। उनकी कविता में कल्पना और साहित्य एक सुंदर मेल देखने को मिलता है, वे कविताएँ आज भी हमें एक सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करती हैं और हमें याद दिलाती हैं कि साहित्य और राजनीति का मिलन समृद्धि और समर्थन की दिशा में एक नया परिप्रेक्ष्य प्रदान कर कर सकता है।

मदनमोहन मालवीय और उनके सामाजिक सुधार: एक गर्व की कहानी

वेदिका सावल

मदनमोहन मालवीय, भारतीय इतिहास के युगपुरूषों में से एक हैं। अपने जीवन के दौरान, उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में आपदाओं और संकटों का सामना किया, पर मदनमोहन मालवीय का सबसे बड़ा योगदान उनके सामाजिक सुधारों में था। वह न सिर्फ एक देशभक्त, शिक्षाविद और धर्मनिष्ठ माने जाते थे, बल्कि उन्होंने एक समाजसेवी के रूप में भी अपने आप को सिद्ध किया।

मदनमोहन मालवीय ने अपने जीवन के दौरान विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर काम किया। धर्म, शिक्षा, महिला सशक्तीकरण और स्वदेशी आंदोलन जैसे विषयों पर उनका योगदान बेहद महत्वपूर्ण था। मालवीयजी ने धार्मिक सुधारों के माध्यम से समाज को स्वतंत्रता, उच्चता और न्याय की ओर पहुंचाने का प्रयास किया। उन्होंने धर्म की अवधारणा को मूलभूत शिक्षा का हिस्सा माना और धर्म के माध्यम से जाति, धर्म और भाषा के आधार पर भेदभाव से छुटकारा दिलाने का प्रयास किया।

एक और महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दा उनकी छात्राओं की शिक्षा की व्यवस्था थी। मालवीय ने शिक्षा को एक महत्वपूर्ण सामाजिक सुधार के रूप में माना और गरीब छात्रों के लिए सुलभ और अच्छी शिक्षा को प्रदान करने का प्रयास किया। उन्होंने **बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय** की स्थापना की, जहां स्त्री शिक्षा को महत्व दिया जाता था। इसके अलावा भी उन्होंने महिलाओं की शिक्षा पर भी विशेष ध्यान दिया। मालवीय ने **भारतीय नारी विद्यालय** को स्थापित किया, जो महिलाओं की उच्च शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है।

मालवीय ने महिलाओं की उच्चतर शिक्षा को महत्व दिया और उन्हें समाज के निर्णायक और नेतृत्वी भूमिका में सराहा। उन्होंने स्त्रियों को नये अवसरों के लिए समर्पित किया और महिला शिक्षा के लिए विशेष नगरी प्रगति यात्रा की। उन्होंने महिलाओं के लिए न केवल शिक्षा की व्यवस्था स्थापित की बल्कि उन्हें वो सम्मान भी दिया जो उन्हें उनके हक के अनुसार मिलना चाहिए था। अंत में, मदनमोहन मालवीय को स्वतंत्रता संग्राम में भी महत्वपूर्ण योगदान का अवसर मिला। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन को जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना लिया था और उनका योगदान अद्वितीय था। वे गांधीजी के समर्थन में थे और खादी और स्वदेशी आंदोलन के पक्ष में काम करते थे। मालवीय ने विभिन्न जन-आंदोलनों में भाग लिया और देश को स्वतंत्रता की ओर ले जाने के लिए अपना संकल्प दिखाया।

मदनमोहन मालवीय के सामाजिक सुधारकार्य इतने व्यापक और महत्वपूर्ण हैं कि उन्हें एक गर्व की कहानी कहा जा सकता है। उनके योगदान ने न केवल समाज को परिवर्तित किया, बल्कि वह आज भी हमारे जीवन का हिस्सा हैं। उनके सामाजिक सुधारों ने समाज में न्याय, उच्चता और स्वतंत्रता के सिलसिले को मजबूती प्रदान की है। मालवीयजी का जीवन-दर्शन और कार्य वास्तव में हमें गर्व और प्रेरणा देते हैं और आज भी हमें सामाजिक सुधारों के मार्ग पर आगे बढ़ने में मदद करते हैं।

ईर्ष्या

एक बार एक सेठ ने दो दिग्गज पण्डितों को भोजन पर आमंत्रित किया। समय पर दोनों पण्डित पधारे तो सेठ ने उनका स्वागत किया। उनको आदर से आसन पर बैठाया।

उनमें से एक पण्डित जब स्नान करने के लिए गए तो सेठ ने दूसरे पण्डित से कहा, ''महाराज! ये आपके साथी तो महान विद्वान मालूम देते हैं?''

'' यह और विद्वान? क्या बात करते हो सेठ जी! यह तो निरा बैल है बैल।'' पण्डित जी ने उत्तर दिया।

सेठ को बहुत बुरा लगा। किन्तु वह चुप ही रहा।

पहले पण्डित जी जब स्नान करके वापस आए तो दूसरे पण्डित जी स्नान करने कि लिए गए। सेठ ने उनसे भी वही प्रश्न किया, '' महाराज! ये आपके साथी तो महान विद्वान मालूम देते हैं?'' पण्डित जी बोले, सेठ जी! किसने बहका दिया आपको? वह तो निरा गधा है गधा।''

सेठ इस समय भी मौन ही रहा। जब भोजन का समय आया तो सेठ ने चाँदी की थाली में एक पण्डित के आगे घास रख दी और दूसरे के आगे भूसा रख दिया। उस भोजन को देखकर दोनों पण्डित क्रोध से तमतमा उठे। बोले, ''आप हमारा इस प्रकार अपमान कर रहे हैं? इतनी बड़ी धृष्टता करने का आप में साहस कैसे हुआ?''

सेठ ने हाथ जोड़कर नम्रता से कहा, ''महाराज! मैंने तो आप लोगों के कथनानुसार ही आप लोगों के सम्मुख भोजन परोसा है। आपने इनको बैल बताया था और इन्होंने आपको गधा। सो वैसा ही भोजन मुझे मँगाना पड़ा। इसमें मेरा क्या दोष महाराज! मैं तो आप दोनों को ही विद्वान समझता था, इसलिए आमंत्रित किया था। किन्तु वास्तविकता का ज्ञान तो आप लोगों से ही प्राप्त हुआ है।''

सेठ की बात सुनकर दोनों पण्डित मन ही मन लज्जित हुए। सोचने लगे परस्पर ईर्ष्या का परिणाम अच्छा नहीं होता। स्वयं यदि प्रतिष्ठा प्राप्त करनी हो तो अपने योग्य साथी को भी प्रतिष्ठित करना होगा।

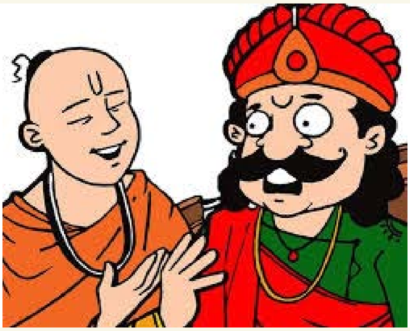

म्हारो प्यारो मालवो

शिव राठौर 'शिव' शाजापुर

म्हारो प्यारो माळवो, मन के म्हारा भाय रे भई।
छोटी-मोटी डूंगरी, नद्दी वेती जाय रे भई।

कुंवा-बावड़ी भराया, पानी से उबराय रे भई
सरवर की या ल्हेर म्हारा मन के लेहराय रे भई।
केसर की क्यारी जेसी खेती लेहराय रे भई
मोती हीरा सो नाज खेतां में बेराय रे भई।

डग-डग पे रोटी मिले यां पग-पग पे पाणी
माळवा की मनवार, मीठी-मीठी वाणी।
माळवा में लोग दूर-दूर का बोसाय रे भई
ऐसो म्हारो माळवो, मन के म्हारा भाय रे भई।

गऊँड़ा का खेत लीला लेरायरे भई
धरती के काळी चूनड़ी ओड़ाय रे भई।
सरसूं का फूल पीळा सोनो पेराय रे भई
छोटा-छोटा गांव में, माळवो समाय रे भई।

धोती-कुरता ने माथे, पागा लेराय रे भई
धरती, धन, ढोर म्हारा माळवा को गेणो हे।
जद-जद भी जनमुं मिले माळवा में रेणो हे
धरती में सुन्नौ ने चांदी वेराय रे भई।

म्हारो प्यारो माळवो, मन के म्हारा भाय रे भई।

टाइफाइड का घरेलु उपचार

टाइफाइड के घरेलू इलाज - 5 तुलसी पत्ते , खुबकला 3 ग्राम , 3 अंजीर , 7 मुनका का काढ़ा बना के पिलाये सुबह शाम। गिलोय का काढ़ा 1 तोला व आधा तोला शहद में मिलाकर दिन में 2-3 बार पिलाना लाभकारी है ।

नीम के बीज पीसकर 2-2 घंटे के बाद पिलाने से आन्त्रिक ज्वर उतर जाता है । यह योग मल निकालता है। शरीर में ताजा खून बनाता है, नयी शक्ति का संचार करता है। यदि मलेरिया बुखार से टायफाइड बना हो तो नीम जैसी औषधि के अतिरिक्त अन्य कोई सस्ता और सहज उपचार नहीं है। जीरा सफेद 3 ग्राम 100 मि. ली. उबलते जल में डाल दें। इसे 15-20 मिनट के बाद छानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर रोगी को दें। 10-15 दिनों तक निरन्तर प्रातःकाल में पीने से ज्वर उतरने के पश्चात् आने वाली कमजोरी व अग्निमान्द्य नष्ट होकर भूख खुलकर लगने लगती है।

टाइफाइड के बाद सावधानी

1- पहले लक्षण दिखलायी देने के 8 सप्ताह तक रोगी को दूसरे स्वस्थ एवं निरोगी व्यक्तियों से अलग रखना चाहिए।

2- रोगी के संपर्क में आने वालों को टीका लगवायें, दूध और पानी उबाल कर दें, कच्चे फल एवं शाक आदि न दें तथा रोगी द्वारा छुई हुई (पकड़ी या प्रयोग में लाई गई) प्रत्येक वस्तु का शुद्ध करना चाहिए।

3- रोगी को पूर्ण विश्राम दें। घूमने-फिरने न दें।

4- रोगी के बिस्तर एवं कमरे में स्वच्छता बनाये रखें। विशेषतः रोगी का बिस्तर 1-1 दिन बाद बदलवा दें तथा रोगी द्वारा प्रयोग में लाया गया बिस्तर को पूरे दिन की धूप दिखला दें। रोगी के कमरे में सूर्य का प्रकाश (रोशनी) एवं शुद्ध वायु आनी जरूरी है।

5- रोगी को अकेला न छोड़ें किन्तु उसके कमरे में अधिक भीड़-भाड़ भी न हो ।

6- रोगी के पेट, मल-मूत्र, पीठ, नाड़ी, तापमान तथा दिन में पिये जल की मात्रा का पूर्ण विवरण बनाये रखें।

7- रोगी का मुख खूब अच्छी तरह कुल्ले करवाकर शुद्ध रखना चाहिए।

8- मुँह आने और होंठ पकने पर 'बोरो गिलेसरीन' लगावें। रोगी की अन्तड़ियों का वायु से बहुत अधिक फूल जाना इस रोग का बुरा लक्षण है।

9- तारपीन का तेल 5 मि.ली. सवा किलो गरम पानी में मिला कर इसमें फलालेन का कपड़ा (टुकड़ा) भिगो एवं निचोड़कर गद्दी बनाकर पेट पर बाँध दें। रोगी को आराम मिलेगा।

10- दालचीनी का तेल 2-3 बूंद पेट फूलने, पेट में दर्द तथा पेट में वायु पैदा होने के लिए अत्यन्त लाभकारी है।

11- घर के दरवाजे एवं खिड़कियाँ बन्द करवाकर रोगी का शरीर खौले हुए मामूली गर्म पानी से पोंछवा दें। अधिक दिनों तक लगातार शैय्या पर रहने के कारण रोगी को जो 'शैय्या क्षत' (बिस्तर के घाव) कमर, पीठ, कूल्हों आदि में हो जाते हैं, वे न होने पायें, इसका ध्यान रखें।

टाइफाइड में क्या खाएं क्या न खाए

1- रोगी को तरल, पुष्टिकर, लघुपाकी, आहार जैसे गाय के दूध में ग्लूकोज मिलाकर दें।

2- पेट बहुत अधिक फूल जाने पर तथा समय से सही चिकित्सा न करने पर रक्त में विषैले प्रभाव फैल जाने या अन्तड़ियों में छेद हो जाने का डर उत्पन्न हो जाता है। ऐसी परिस्थिति में-कम मात्रा में भोजन खिलायें। 3- दही का मट्ठा पानी में घोलकर दूध के स्थान पर दें।

4- मीठे सेव का रस पिलायें।

5- दूध के स्थान पर दही का मट्ठा थोड़ी मात्रा में बार-बार पिलाते रहने से दस्तों में भी आराम आ जाता है।

6- तीन-चार बूंद दालचीनी का तेल ग्लूकोज आदि में मिलाकर रोगी को 2-2 घन्टे बाद खिलाते रहने से दस्तों की बदबू, पेट की वायु और कई दूसरे कष्ट दूर हो जाते है।

7- रोगी को रोग की प्रथमावस्था में सादा सुपाच्य भोजन दें।

8- यदि पतले दस्त न हों तो दूध दें।

9- अफारा हो तो ग्लूकोज दें।

10- रोगी को किसी भी कड़ी वस्तु का पथ्य न दें।

राष्ट्रीय किसान दिवस

रत्नदीप निगम

भारत को कृषि प्रधान देश के रूप में जाना जाता है। यहाँ की लगभग 50 प्रतिशत आबादी अब भी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है और जीवन यापन के लिए खेती संबंधी कार्यों पर निर्भर है। इसलिए देश के विकास और अर्थव्यवस्था में किसानों के योगदान के बारे में लोगों को शिक्षित करने के लिए और देशभर में जागरूकता फैलाने के लिए हर वर्ष 23 दिसंबर को राष्ट्रीय किसान दिवस मनाया जाता है। भारत सरकार ने सन् 2001 में पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के जन्म दिवस 23 दिसंबर को राष्ट्रीय किसान दिवस मनाने की शुरूआत की थी। कृषि के लिए किसानों के योगदान और किसानों के कल्याण के लिए, उनके संघर्ष को सम्मान देने के लिए किसान दिवस मनाने का निर्णय लिया गया था।

राष्ट्रीय किसान दिवस पर सरकार द्वारा विभिन्न सेमिनार, कार्यक्रम, कृषि और किसानों की स्थिति पर वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ और अन्य गतिविधियों का आयोजन कर देशभर के किसानों को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया जाता है। राष्ट्रीय किसान दिवस का महत्व इसलिए भी है कि किसान को अन्नदाता तथा धरतीपुत्र भी कहा जाता है। पूरी दुनिया में अमीर हो या गरीब, नौकरीपेशा हो या उद्योगपति, सभी भोजन के लिए किसान की मेहनत पर आश्रित हैं।

पूरे साल दिन-रात, गर्मी, बारिश और ठंड की परवाह किए बिना किसान अपनी मेहनत से खेतों में फसल उगाता है और पूरे देश की भूख मिटाने का काम करता है, इसलिए किसानों के परिश्रम और बलिदान को समाज के सामने प्रस्तुत करने के लिए किसान दिवस मनाना एक उचित समय होता है। इस दिन का उपयोग किसानों को उनकी उपज बढ़ाने के लिए नवीनतम कृषि ज्ञान प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए भी किया जाता है।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

इंदौर के नीम व बरगद

डॉ. ओ.पी जोशी

म.प्र. की औद्योगिक राजधानी कहे जाने वाले इंदौर शहर में भी प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में शहीद राजा बख्तावरसिंह एवं सआदत खाँ के बलिदान की यादें समाए नीम एवं बरगद के दो वृक्ष हैं।

शहर के प्रसिद्ध एम.वाय. हॉस्पिटल के पास ई.के.ई.एच. परिसर में लगभग 200 वर्ष पुराना एक नीम का पेड़ है। इस पेड़ पर 10 फरवरी 1858 को प्रातः 34 वर्षीय अमझेरा के राजा बख्तावरसिंह राठौर को उनके साथियों सहित फाँसी दी गई थी। साथियों के नाम हैं - सलकूराम, भवानीसिंह, चिमनलाल, मोहनलाल, मंशाराम, हीरासिंह, गुल खाँ, शाह रसूल खाँ, वशीउल्ला खाँ, मोहम्मद मुंशी नसरूल्ला तथा नगाड़ावादक फकीर। राजा बख्तावरसिंह को नहाते समय अंग्रेजों ने धोखे से पकड़ा था एवं महू की जेल में तीन माह तक रखा था। जेल की सजा पूर्ण होने पर मुकदमा चलाकर फाँसी की सजा सुनाई गई थी। फाँसी के बाद सभी शवों को दो दिनों तक पे पर ही लटकाए रखा था ताकि लोगों में भय पैदा हो एवं वे अंग्रेजों के विरूद्ध बगावत नही करें। बाद में

अंग्रेजों से लड़ाई में राजा बख्तावरसिंह की पत्नी रानी दौलत कुंअर भी मारी गई थीं। स्थानीय राजपूत क्लब तथा पद्मश्री कुट्टी मेनन एवं मेडिकल कॉलेज के प्रो. डॉ. मनोहर भंडारी के प्रयासों से नगर निगम ने 2022 में यहाँ एक स्मारक बनाया। अब प्रतिवर्ष 10 फरवरी को लोग यहाँ एकत्र होकर शहीदों को याद कर श्रद्धांजलि देते हैं।

लघुकथा

डॉ. योगेन्द्रनाथ शुक्ल

वे आज बहुत व्याकुल थे। जीवन के इस पड़ाव पर आकर उनकी कुटुंब की मान्यता टूटने लगी। संतान नहीं होती तो दुख होता है। संतान यदि होकर मर जाए तो और अधिक दुख होता है, लेकिन यदि संतान पिता को वृद्धाश्रम छोड़ आए तो यह उन सबसे बड़ा दुख है। कितना बड़ा कुटुंब है, बेटे हैं, बेटियां हैं, नाते रिश्तेदार हैं, लेकिन पूरे अठारह दिन हो गए, कोई खबर लेने नहीं आया। अब तो लगता है, वृद्धाश्रम में ही शेष जीवन कटेगा।

बगीचे में टहलते हुए आज जब उस बोर्ड की ओर उनकी दृष्टि गई तो उनकी व्याकुलता और अधिक बढ़ गई।

वसुधैव कुटुंबकम् के अक्षर उनकी डबडबाई आंखों के सामने धुंधले होने लगे।

दिल्ली में राष्ट्रीय शूटिंग चैंपियनशिप में 596 अंक अर्जित कर नेशनल क्वालीफाई किया।

बेरछा दातार गांव की युगेश्वरी ने भारतीय शूटिंग टीम के ट्रायल में बनाई जगह

कालापीपल तहसील के ग्राम बेरछा दातार की बेटी युगेश्वरी पिता विक्रमसिंह बैंस ने दिल्ली में आयोजित 66 वीं राष्ट्रीय शूटिंग चैंपियनशिप प्रतियोगिता में आयोजित स्पर्धा पॉइन्ट 22 प्रो पोजीशन 50 मीटर में 596 अंक अर्जित कर नेशनल क्वालीफाई कर भारतीय शूटिंग टीम के ट्रायल में अपनी जगह बनाई है। उक्त प्रतियोगिता की तैयारी वीर राइफल इंदौर से खेलते हुए कोच शाद शाह भोपाल के मार्गदर्शन में हुई है। बता दें कालापीपल तहसील क्षेत्र के ग्राम बेरछा दातार निवासी युगेश्वरी बैंस की शूटिंग में बचपन से रूचि थी। वह अपनी नियमित पढ़ाई के साथ-साथ शूटिंग में भी अपने हाथ आजमाती रही, वहीं इंदौर में रहकर वीर राइफल एकेडमी में शूटिंग की तैयारी की। इसी के चलते दिल्ली में आयोजित स्पर्धा प्वाइंट 22 प्रो पोजिशन 50 मीटर में 596 अंक अर्जित कर नेशनल क्वालीफाई कर भारतीय शूटिंग टीम के ट्रायल में जगह बनाकर कालापीपल क्षेत्र का नाम गौरवान्वित किया। मनीष पंवार, सुरेश कुमार वर्मा, पीयूष पंवार, मानस राठौर, दिनेश धनगर, अनुराग पाटीदार आदि ने इस पर हर्ष व्यक्त किया।

राष्ट्र सेविका समिति इंदौर वार्षिक पथ संचलन

दिनांक 26.11.2023 रविवार को राष्ट्र सेविका समिति इंदौर की बहनों द्वारा अपना वार्षिक पथ संचलन निकाला गया। जिसमें नन्ही बालिकाएं, युवा छात्राएं, ग्रहणी, जॉब और व्यवसाय सभी वर्ग की मातृशक्ति ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

इंदौर में प्रकृति ने अपनी वर्षा रूपी बाधा बहनों के संचलन में डालना चाही, याने कि खूब जम के बादल बरसे, हवा चली। किंतु मातृ शक्ति के कदम अपने तय कार्यक्रम से तनिक भी न डिगे। बारिश ने अपना काम किया, मातृशक्ति ने अपना।

श्रीराम जन्मभूमि की मुक्ति हेतु गुरु गोविंद सिंह जी भी दो बार लड़े थे।

खालसा पंथ के संस्थापक दशमेश गुरु श्री गोविन्द सिंह जी का हमारे देश, धर्म व संस्कृति की रक्षा हेतु योगदान विश्व इतिहास में अनुपम है। उन्होंने अपनी निहंग सेना के साथ अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि की मुक्ति के लिए दो बार युद्ध भी किया था। संपूर्ण हिन्दू समाज महान् गुरुओं के ज्ञान, तप और बलिदानी इतिहास का सदैव ऋणी रहेगा।

गुरू नानक देव की कृपा और प्रेरणा तथा गुरु गोविन्द सिंह जी के प्रयास का ही परिणाम है कि जन्मभूमि पर भगवान श्रीराम अब शीघ्र ही अपने भव्य मंदिर में विराजमान होने जा रहे हैं।

क़िताब पहले से लिख के तैयार थी...

किताब पहले से लिख के तैयार थी... कलावा हाथ में बंधा था, किसी भी हाल में जिंदा ना पकड़े जाने का ऑर्डर था.. मुंबई 26/11 को भगवा, हिन्दू आतंकवाद बताने की पूरी स्क्रिप्ट तैयार थी....

पर भारतीय सेना के सेवानिवृत्त जवान, मुंबई पुलिस के असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर अमर हुतात्मा स्वर्गीय तुकाराम गोपाल ओंबले जी के साहस ने सारा खेल बिगाड़ दिया ..!!

छाती छलनी हो गयी गोलियों से पर उन्होंने आखरी साँस तक आतंकवादी अजमल आमिर कसाब को छोड़ा नहीं....पिछले पांच सौ सालों में शायद ही किसी अकेले शख्स ने हिंदुओं के लिये इतना बड़ा काम किया होगा...!!

अमर बलिदानी हुतात्मा तुकाराम ओम्बले आपके बलिदान को शत शत नमन है। आप न होते तो हर हिन्दू आतंकवादी कहलाता....

मुंबई हमले में बलिदान हुए भारत माँ के वीर सपूतों तथा अपने प्राण गंवाने वाले निर्दोषों को विनम्र श्रद्धांजलि।

74वां संविधान दिवस..... कोटिश: नमन बाबासाहेब

26 नवंबर 1949 को, संविधान समिति ने संविधान के प्रारूप को मंजूरी दी और 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू हुआ। प्रारंभ में संविधान की कोई मुद्रित प्रति उपलब्ध नहीं थी। दिल्ली के प्रेमबिहारी नारायण रायजादा ने अंग्रेजी में और हिंदी में वसंत वैद्य ने संकलन की जिम्मेदारी स्वीकार की।

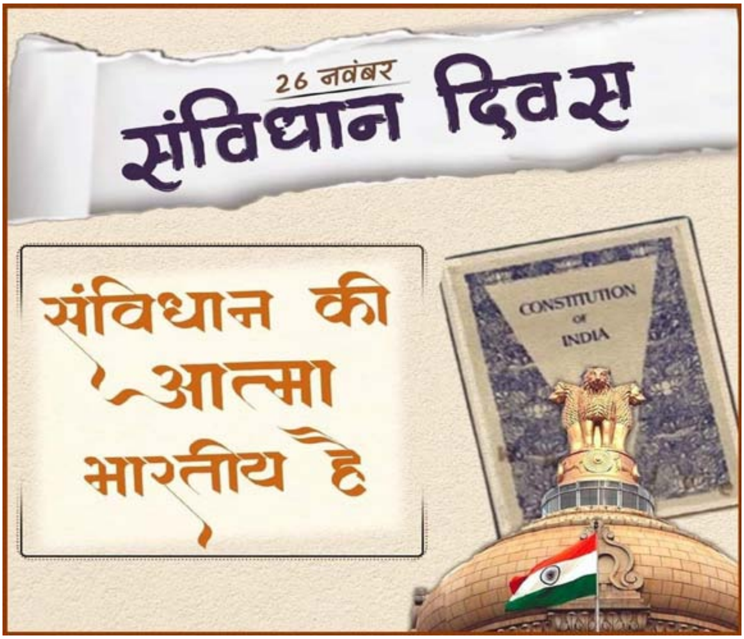

प्रेमबिहारी रायजादा ने संविधान के 22 भागों, 395 लेखों और संविधान के 8 परिशिष्टों को बहुत ही सुंदर लिपि में लिखा। पहले पृष्ठ से अंतिम पृष्ठ तक लिखावट अद्भुत है। इसमें 254 बोतल स्याही और 303 नीब वाले पेन लगे थे। इसके अलावा, प्रत्येक पृष्ठ पर, महान चित्रकार नंदलाल के नेतृत्व में शांतिनिकेतन के कलाकारों ने फ्रेम को उकेरा।

मूल पांडुलिपि के प्रत्येक भाग की शुरुआत में महान चित्रकार नंदलाल बोस ने भारतीय संस्कृति और इतिहास के साथ कुल 22 दृश्य खींचे हैं। नंदलाल बोस के चित्रों में मोहनजोदड़ो, सिंधु संस्कृति में वृषभ, वैदिक काल में गुरुकुल प्रणाली, रामायण में श्रीराम-लक्ष्मण-सीता-हनुमान, महाभारत में श्रीकृष्ण-अर्जुन संवाद, गौतम बुद्ध-महावीर के दर्शन, सम्राट विक्रम शामिल हैं। मराठा काल में छत्रपति शिवाजी महाराज के अलावा, चोल परंपरा में नटराज की मूर्तियां, गुरु गोविंद सिंह, रानी लक्ष्मीबाई, गांधीजी की दांडी यात्रा, सुभाष चंद्र बोस, नालंदा विश्वविद्यालय आदि शामिल हैं।

ध्येय साधना में समर्पित जीवन - पूज्य सरदार चिरंजी सिंह जी

आदरणीय सरदार चिरंजीव सिंह जी के देहावसान के साथ राष्ट्र के लिए समर्पित एक प्रेरणादायी जीवन की इहलोक यात्रा पूर्ण हुई है।

आजीवन संघ के निष्ठावान प्रचारक रहे सरदार चिरंजीव सिंह जी ने पंजाब में दशकों तक संघकार्य किया। तत्पश्चात् राष्ट्रीय सिख संगत के कार्य के द्वारा उन्होंने पंजाब की कठिन परिस्थिति के कारण उत्पन्न परस्पर भेद और अविश्वास को दूर कर, समूचे देश में साँझीवालता और राष्ट्र- भाव के प्रकाश में एकात्मता और सामाजिक समरसता को पुष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके अगाध परिश्रम, पंजाब की गुरु-परंपरा के गहन अध्ययन, उत्तम संगठन कौशल के कारण असंख्य लोगों को उन्होंने राष्ट्रीयता के प्रवाह में जोड़ दिया। सरदार चिरंजीव सिंह जी के स्नेहिल और मधुर व्यक्तित्व ने सब का मन जीत लिया था। कुछ समय से अस्वस्थता के कारण सक्रिय नहीं रह पाने पर भी, उनके उत्साह में कमी नहीं थी। आदरणीय सरदार जी के निधन पर हम उनके परिजनों व परिचितों को अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हैं तथा अकालपुरुष से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा दिव्य ज्योति में लीन होवे। ऊँ शांतिः॥

राष्ट्रनिर्माण में समर्पित जीवन श्रद्धेय अशोक जी सिंघल की पुण्यतिथि पर उन्हें कोटि कोटि नमन....!

श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन के पुरोधा, विश्व हिंदू परिषद के शिखर पुरुष, अपना संपूर्ण जीवन हिन्दू धर्म और राष्ट्र के लिये समर्पित करने वाले, संघ प्रचारक, हिंदू अस्मिता के प्रतीक, जिनके अथक प्रयासों से रामजन्मभूमि आंदोलन आज मूर्त रूप लेकर भव्य राममंदिर निर्माण होकर आगामी 22 जनवरी 2024 को प्रतिष्ठित होने जा रहा है।

ऐसे महामानव संत स्वरुप अध्यात्म के ज्योतिपुंज **श्रद्धेय श्री अशोकजी सिंघल** की पुण्यतिथि पर विश्व संवाद केंद्र मालवा परिवार की ओर से कोटिशः नमन वंदन।

सबके
सबमें
राम

निर्माणाधीन भव्य श्रीराम मंदिर, अयोध्या

जनवरी माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

- ता. 01 रूक्मिणी अष्टमी
- ता. 09 प्रदोष व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत
- ता. 13 तिलका मांझी बलिदान दिवस
- ता. 14 विनायकी चतुर्थी व्रत
- ता. 15 मकर संक्राति पुण्यकाल
- ता. 28 लाला लाजपतराय जयंती
- ता. 30 शहीद स्मृति दिवस

बुक-पोस्ट

जाग्रत मालवा

प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी, पोलोग्राउन्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यू इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731 -3551341